**CHETANA**
International Journal of Education

Impact Factor
**SJIF=5.689**

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

**Prof. A.P. Sharma**
Founder Editor, CIJE
**(25.12.1932 - 09.01.2019)**

**Received on 20th Oct. 2020, Revised on 07th Nov. 2020, Accepted 19th Nov. 2020**

**शोध पत्र**

# निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यवसाय चयन को लेकर उत्पन्न हुए तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

* **ज्योत्सना शर्मा,** *शोधार्थी*
*उमा शिव मेमोरियल कॉलेज, भगवानपुरा, कोटा*
**डॉ. दीपा आचार्य,** *प्राचार्या एवं शोध निर्देशिका*
*एलबर्ट आइंस्टाइन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा*
*Email –jyotsna.sharma1407@gmail.com, Mob.-8619267113*

***मुख्य शब्द :*** *विद्यार्थी, निजी विद्यालय, उच्च माध्यमिक स्तर, व्यवसाय, तनाव आदि.*

**सारांश**

प्रस्तुत शोध में निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यवसाय चयन को लेकर उत्पन्न हुए तनाव का अध्ययन किया गया है। जिसमें शोधार्थी को ज्ञात हुआ कि निजी विद्यालय के छात्रों में छात्राओं की अपेक्षाकृत व्यवसाय चयन को लेकर अधिक तनाव होता है। इस समस्या के समाधान के लिए विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जो उनके व्यक्तित्व का विकास करे तथा उन्हें आत्मनिर्भर बना सके।

**प्रस्तावना**

वर्तमान में हमारी शिक्षा नीति कैरियर आधारित है जो किसी भी तरह सिर्फ पैसा अर्जित करने पर केन्द्रित है, न कि रोजगार सृजन आधारित नवाचार आधारित, नवसृजन आाधारित। जबकि हमारी परम्परागत शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों के भारत आने से पूर्व रोजगार सृजन आधारित, नवाचार आधारित थी। जहाँ वोकेशनल ट्रेनिंग की बहुत बड़ी अहमियत थी, तभी तो हम लोग उस समय दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में देशी की चारों दिशाओं के लोगों के विकास में सहयोगी रहते थे।

नथमल डिडेल के अनुसार "शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है शिक्षक अध्यापन के द्वारा और विद्यार्थी अपने अध्ययन से सत्र पर्यन्त की साधना करते हैं। सत्रान्त में शिक्षक और विद्यार्थी सर्वश्रेष्ठ परिणाम की आशा करते हैं। हमारा दायित्व है कि विद्यार्थी आनंदमयी वातावरण में सहजता से परीक्षा दे विद्यार्थयों पर परीक्षा का तनाव नहीं हो वे भयमुक्त होकर अपने विषय में प्राप्त ज्ञान के सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रदर्शित कर सकें।"

गीता ज्ञान– "गीता मानव को कर्म की शिक्षा देती हैं। मानव को प्रेरणा दायक जीवन जीने को प्रेरित करती है। अज्ञान दूर कर ज्ञान का प्रसार करती है। गीता के ज्ञान से छात्रों का जीवन सरल, सुबोध आचरणवान व कर्तव्यनिष्ठ बनता है।"

वर्तमान समय में बालक एक मशीन की गति कार्य करता है जिसमें वह दूसरों से सामर्थ्य को बिना जाने बिना समझे जबकि यदि अपने सामर्थ्य अनुसार कार्य करता है तो वह अपने जीवन में अधिक सफल बनता है तथा तनावमुक्त जीवन जी सकता है।

वर्तमान स्वरूप में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है जिससे शिक्षा के स्तर में कमी आई है अभी के युग में वह डिग्रीधारी तो हो जाता है परन्तु ज्ञानवान नहीं हो पाता जिससे उसे उचित रोजगार नहीं मिल पाता तथा विद्यार्थी तनाव का शिकार हो जाता है।

महात्मा गाँधी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भले ही अंग्रेजी शिक्षा ली, लेकिन उनके भीतर भारत के परम्परागत मूल्यों और आदर्शों के प्रति गहरी आस्था थी और दोनों ने एक ऐसी शिक्षा पर जोर दिया जो व्यक्ति का सार्वभौमिक विकास करे, उसे केवल ज्ञानी न बनाए, विवेकशील और संवेदनशील भी बनाए।

शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो विद्यार्थी को आत्मनिर्भर, संबल बनाए परन्तु वर्तमान शिक्षा विद्यार्थी को शिक्षित तो बनाती है लेकिन आत्मनिर्भर नहीं बनाती है जिससे विद्यार्थी शिक्षित होने के बाद भी रोजगार के अभाव में भटकता रहता है तथा यही तनाव को जन्म देता है।

भारत में शिक्षा और ज्ञान का महत्व प्राचीनकाल से ही समझा गया है। भारतीय ऋषि अविद्या एवं अशिक्षा को मृत्यु तुल्य मानते है। यही नहीं "ज्ञानम् तृतीयम मनुजस्य नेत्रम्" वैदिककाल में शिक्षा को ही प्रकाश माना गया है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित करने का सामर्थ्य रखता है। इसलिए शिक्षा को तीसरा नेत्र कहा गया है शिक्षा मनुष्य को बेहतर बनाती है, शिक्षा से विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है वह आत्मनिर्भर होता है।

**रूसो** – "छात्रों का पुस्तको से चिपका रहने की तुलना में उसे कार्यशाला में काम करने दिया जाय जिससे बुद्धि व सही विकास के लिए उसके हाथ काम करें।"

सच्ची शिक्षा वह शिक्षा है जो मनुष्य के अन्दर से प्रस्फुटित होती है, यह व्यक्ति की अन्तर्निहीत शक्तियों की अभिव्यक्ति हैं।

विद्यार्थी अपने विकास में ऐसी परिस्थितियों का सामना करता है जो उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति एवं लक्ष्य प्राप्ति में बाधक होती है। ऐसी स्थिति में यदि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तो वह अपनी परिसिथिति या वातावरण में समायोजन कर लेता है पर यदि उसें सफलता नहीं मिलती तो उसे मानसिक तनाव घेर लेता है।

आधुनिक युग में जहाँ एक ओर भौतिक सुख सुविधाओं में आपार वृद्धि हो रही है वही दूसरी ओर तनाव में भी वृद्धि हो रही है विद्यार्थी पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी जब बेरोजगार रह जाता है तो वह चिन्ता व तनाव से भर जाता है।

वर्तमान में शिक्षा संक्रमणकाल से गुजर रही है। आज सूचना को ज्ञान का पर्याय एवं शिक्षा को मापन के साथ–साथ साध्य बना दिया गया है शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा तक सीमित रह गया है शिक्षण संस्थाओं में शैक्षणिक परिवेश प्रायः लुप्त हो गये है यद्यपि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिये शिक्षण संस्थाओं की संख्या में वृद्धि हुई है परन्तु शिक्षा की गुणवत्ता का ह्रास हुआ है।

शिक्षा की गुणवत्ता विकास के लिये शैक्षिक सुधारों का नियोजन निरूपण व परिणाम में निमन्त्रण तथा विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यकता को महसूस किया जाता रहा है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके किशोर पर निर्भर करता है, एक किशोर ही आने वाले समय में राष्ट्र का निर्माता होता है, बालक का सर्वांगीण विकास शिक्षा द्वारा ही सम्भव है।

लक्ष्यहीन शिक्षा का कोई मूल्य नहीं है। शिक्षा द्वारा किशोर बालक की मूल प्रवृतियों का शोधन तथा मार्गन्तीकरण इस प्रकार किया जाना चाहिए, जिससे न केवल वह स्वयं के लिए अपितु राष्ट्र के लिए भी हितकारी व कल्याणकारी बनें।

**समस्या का औचित्य**

वर्तमान शिक्षा व व्यवस्था छात्रों में असन्तोष को जन्म दे रही है। गुणवत्तापूर्ण तथा रोजगार परक शिक्षा के अभाव में देश में शिक्षित बेरोजगारी का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। व्यवसायिक तनाव व चिन्ता विद्यार्थी जीवन का हिस्सा बन चुकी है व्यवसायिक तनाव

विद्यार्थियों में आज एक विशेष समस्या बन चुका है। और इस समस्या ने एक नई बीमारी को जन्म दिया है जो विद्यार्थी को मानसिक व शारीरिक दोनों रूपों में नष्ट कर रही है वह है "तनाव", तनाव के कारण बालक का मन असंतोष व व्याकुलता से भर जाता है। इसलिए प्रस्तुत शोध में निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसाय चयन को लेकर उत्पन्न तनाव का अध्ययन किया गया है।

**शोध के उद्देश्य**

(i) निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में व्यवसाय के चयन के कारण उत्पन्न हुए तनाव का अध्ययन करना।

(ii) निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं में व्यवसाय के चयन के कारण उत्पन्न हुए तनाव का अध्ययन करना।

(iii) निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों व छात्राओं में व्यवसाय के चयन के कारण उत्पन्न तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पना**

(i) निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य व्यवसाय के चयन के कारण उत्पन्न हुए तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(ii) निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के कुल विद्यार्थियों के व्यवसाय चयन एवं तनाव के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

**परिसीमन**

(i) प्रस्तुत शोध को केवल शैक्षिक नगरी कोटा शहर के सन्दर्भ में ही सम्पन्न किया जायेगा।

(ii) सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों का वर्गीकरण निजी छात्र व छात्राओं पर किया जायेगा।

(iii) प्रस्तुत अध्ययन को विद्यार्थियों में व्यवसाय के चयन को लेकर बढ़ते हुए तनाव के अध्ययन तक ही सीमित रखा जायेगा।

(iv) न्यादर्श के रूप में 200 निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया जायेगा।

**अनुसंधान विधि**

शोध विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन व निर्मित परिकल्पनाओं की आवश्यकताओं को जानकर शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि को इस अध्ययन के आधार पर सम्पन्न किया है।

**न्यादर्श**

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध में 200 विद्यार्थियों को शोध के लिए चुना है जिसमें 100 लड़के व 100 लड़कियाँ है। कुल न्यादर्श ईकाईयों का वर्गीकरण सौउद्देश्य यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से चयनित किया गया है।

**शोध में प्रयुक्त उपकरण**

शोध में प्रयुक्त उपकरण निम्नलिखित है –

i. डॉ. विजया लक्ष्मी व डॉ. श्रुति नारायण द्वारा विकसित Stress scale (SS-LCNS) उपकरण

ii. डॉ. सविता आनन्द द्वारा निर्मित Career Aspiration Scale (CAS-SA) उपकरण

**विश्लेषण एवं व्याख्या**

**सारणी संख्या – 1**

**निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के तनाव की तुलनात्मक सारणी**

| क्रम | चर / समूह | N | Mean | SD | t-Value |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | निजी छात्र | 100 | 16.50 | 6.02 | 1.130 |
| 2 | निजी छात्राएँ | 100 | 15.56 | 5.74 | |

**निष्कर्ष**

निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य व्यवसाय के चयन के कारण उत्पन्न तनाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

**सारणी संख्या – 2**

**निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा की तुलनात्मक सारणी**

| क्रम | चर / समूह | N | Mean | SD | t-Value |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | निजी छात्र | 100 | 101.95 | 30.20 | 1.322 |
| 2 | निजी छात्राएँ | 100 | 96.40 | 29.19 | |

**निष्कर्ष**

निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य व्यवसायिक चयन के कारण उत्पन्न तनाव के व्यवसायिक आाकांक्षा में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

**सारणी संख्या – 3**

**निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा व तनाव के मध्य सहसम्बन्ध की सारणी**

| क्रम | वर्ग | N | Mean | SD | Correlation | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | तनाव | 100 | 16.50 | 6.02 | 0.503 | सामान्य |
| 2 | व्यावसायिक आकांक्षा | 100 | 101.95 | 30.20 | | |

**निष्कर्ष**

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं कि निजी उच्च माध्यमिक स्तर के लड़कों को व्यवसायिक आकांक्षाएँ तनाव में लाती है पर सामान्य रूप से।

**सारणी संख्या – 4**

**निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा व तनाव के मध्य सहसम्बन्ध की सारणी**

| क्रम | वर्ग | N | Mean | SD | Correlation | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | तनाव | 100 | 15.56 | 5.74 | 0.501 | सामान्य |
| 2 | व्यावसायिक आकांक्षा | 100 | 96.40 | 29.19 | | |

**निष्कर्ष**

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि निजी उच्च माध्यमिक स्तर की लड़कियों को व्यवसायिक आकांक्षाओं के कारण तनाव होता है परन्तु सिर्फ व्यवसायिक आकांक्षाओं के कारण ही तनाव होता है ऐसा नहीं है यह एक सामान्य तनाव है।

**सारणी संख्या – 5**

**निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के कुल विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा व तनाव के मध्य सहसम्बन्ध की सारणी**

| क्रम | वर्ग | N | Mean | SD | Correlation | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | तनाव | 200 | 16.03 | 5.88 | 0.506 | सामान्य |
| 2 | व्यावसायिक आकांक्षा | 200 | 99.18 | 29.75 | | |

**निष्कर्ष**

अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि निजी उच्च माध्यमिक स्तर के कुल विद्यार्थी व्यवसायिक आकांक्षा को लेकर तनाव तो लेते है परन्तु सामान्य स्तर का।

**सुझाव**

पढ़ाई रटन्त विद्या से दूर हो, बच्चे ज्ञान का सृजन स्वयं करे, शिक्षक उन्हें स्वयं सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करावाए जिससे सतत व व्यापक मूल्यांकन प्रणाली का समावेश हो सके जिससे बच्चे व्यवसाय को लेकर तनावग्रस्त कम हो।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


1) डिडेल नथमल (2 फरवरी 2019) "परीक्षा मूल्यांकन का माध्यम" शिविरा पत्रिका, फरवरी 2019 पृ. 5

2) जोगी, ज्योति (2017) "शिक्षाः गीता ज्ञान" शिविरा पत्रिका नवम्बर 2017 पृ. 8

3) श्रीवास्तव डॉ. सत्येन्द्र प्रसाद (2016) "रूसों के निषेधात्मक शिक्षा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता" शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका Vol. 10(3) 2016

4) Edinbox (28 अप्रेल 2018) "आधुनिक शिक्षा के बीच गुरूकुल की प्रासंगिकता"

5) डॉ त्रिपाठी, डॉ विवेकनाथ व मिश्र, दुर्गेश कुमार (सितम्बर 2016) शिक्षक शिक्षा शोधपत्रिका (2016) Vol. 10(3) 2016 "सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।"

6) झाझडिया, डॉ राजेन्द्र प्रसाद (Aug. 2015) "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

7) शर्मा, गायत्री (Aug. 2016) "गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर हों जोर" शिविरा पत्रिका (Aug. 2016) पृ. 40

8) कुमावत ऋतुदेवी (2017) "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों में आत्महत्या की प्रवृति व मानसिक असन्तुलन का अध्ययन करना।" बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर (राज.) (2015–17)

*** Corresponding Author**
**ज्योत्सना शर्मा,** *शोधार्थी*
*उमा शिव मेमोरियल कॉलेज, भगवानपुरा, कोटा*
**डॉ. दीपा आचार्य,** *प्राचार्या एवं शोध निर्देशिका*
*एलबर्ट आइंस्टाइन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा*
*Email –jyotsna.sharma1407@gmail.com, Mob.-8619267113*